नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

सार्थक धारावाहिक और फिल्मों का निर्माण आवश्यक है : सुश्री लक्ष्मी देसाई

'अमरिकी धारावाहिक और फिल्मों की दुनिया' विषय पर व्याख्यान

वर्धा दि. 20 अगस्त 2018 : 'भारतीय जनमानस और परिवेश को ध्यान में रखकर सार्थक धारावाहिक और फिल्मों का निर्माण आवश्यक है, किंतु केवल टी.आर.पी. और बॉक्स ऑफिस के करोड़ों क्लब्स के मकडजाल में फसकर अर्थहीन, तर्कहीन और अप्रासंगिक धारावाहिक और फिल्में भारतीय दर्शकों के सामने परोसी जा रही है।' उक्त प्रतिपादन बोस्टन अमेरिका निवासी मूल भारत वंशीय नारीवादी चिंतक एवं लेखिका सुश्री लक्ष्मी देसाई ने किया।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के प्रदर्शनकारी कला विभाग (फिल्म एवं थिएटर) द्वारा 'अमेरिकर टीवी धारावाहिक तथा फिल्मों की दुनिया' विषय पर आयोजित व्याख्यान में सुश्री देसाई बोल रही थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. सतीश पावडे ने की। अतिथि का स्वागत सहायक प्रोफेसर अभिषेक सिंह ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने अमेरिकी टीवी धारावाहिक की निर्माण प्रक्रिया, प्रस्तुति, विपणन, अमरिकी दर्शकों का मनोविज्ञान आदि पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा 'लेखक, निर्देशक की स्वतंत्रता को बरकरार रखा जाता है। चरित्र के मनोविज्ञान को उभारा जाता है और एक सार्थक संदेश भी इस प्रक्रिया में निहित होता हैं। अमेरिका के दर्शक जागरूक होकर मनोरंजन की दुनियां में अपना पक्ष बेबाकी से रखते हैं। भारत में मनोरंजन उद्योग अब कार्पोरेटों के हाथों में होने के कारण उसका अर्थकारण सार्थकता के बजाए केवल व्यापार देखता हैं। उन्होंने ऑस्कर और एकेडेमी एवार्ड प्राप्त चयनित फिल्मों की भी चर्चा की।

डॉ. अश्विनि कु. सिंह, डॉ. सुरभि विप्लव, ग्यासुद्दीन खान आदि शिक्षक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफलता हेतु तकनीकी सहायक डॉ. हिमांशु नारायण, प्रगति मनवर तथा उमेश प्रजापति ने प्रयास किए। व्याख्यान के पश्चात सुश्री लक्ष्मी देसाई ने छात्रों के प्रश्नों के उत्तर दिए।

आगे उन्होंने कहा 'अमरिकी धारावाहिकों का बजट भी लगभग फिल्मों के बराबर होता है। चरित्रों को बड़ी गंभीरता के साथ गढ़ा और रचा जाता है। सामाजिक मुद्दों को प्राथमिकता दी जाती है। 'साईंस फिक्शन' पर आधारित धारावाहिक अमेरिका में अधिक लोकप्रिय है। फिल्मों के निर्माण में पटकथा को अधिक महत्व दिया जाता है। महिलाओं के चरित्र भी 'सक्षम' रूप में प्रस्तुत किए जाते है। अंधविश्वास, अतार्किकता को दर्शक पसंद नहीं करते। इस व्याख्यान के अवसर पर विभाग के छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे।